Chhatrapati Shahu Ji Maharaj
University, Kanpur

Answer Script Details
Barcode 11808865

Roll No. 24040000008
Total Mark 52/75.00
Exam MA-III_ODD_EXAM_NOV_2025
Subject A020908T - RoopKalok (Sahitya Varg) (Elective)

Question wise Mark Summary

Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark
1A	4/5	5A	0/7				
1B	3/5	5B	0/7				
1C	4/5	6	0/15				
1D	3/5	7	0/15				
1E	4/5	8	0/15				
1F	4/5	9	14/15				
1G	4/5						
1H	4/5						
1I	4/5						
2A	4/5						
2B	0/5						
2C	0/5						
3A	0/5						
3B	0/5						
3C	0/5						
4A	0/7						
4B	0/7						

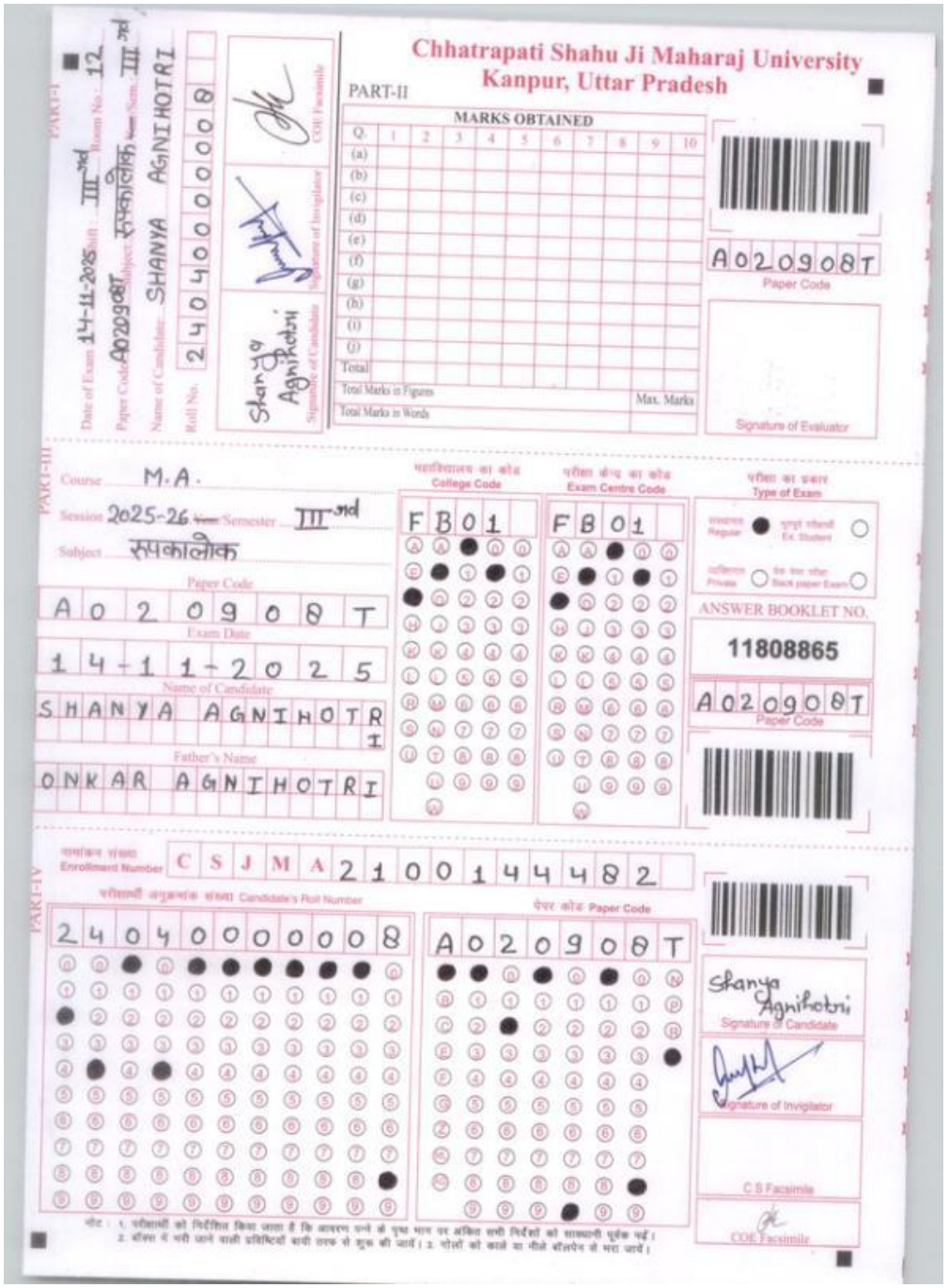

Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University
Kanpur, Uttar Pradesh

PART-I

Date of Exam: 14-11-2025 Shift: III^rd Room No.: 12
Paper Code: A020908T Subject: रूपकालोक Year/Sem.: III^rd
Name of Candidate: SHANYA AGNIHOTRI
Roll No.: 2 4 0 4 0 0 0 0 0 8

Signature of Candidate: Shanya Agnihotri
Signature of Invigilator
COE Facsimile

PART-II

MARKS OBTAINED

Q.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
(a)										
(b)										
(c)										
(d)										
(e)										
(f)										
(g)										
(h)										
(i)										
(j)										
Total										

Total Marks in Figures | Max. Marks
Total Marks in Words

A020908T
Paper Code

Signature of Evaluator

PART-III

Course: M.A.
Session: 2025-26 Year Semester: III^rd
Subject: रूपकालोक

Paper Code: A 0 2 0 9 0 8 T
Exam Date: 1 4 - 1 1 - 2 0 2 5
Name of Candidate: SHANYA AGNIHOTRI
Father's Name: ONKAR AGNIHOTRI

महाविद्यालय का कोड College Code: F B 0 1

परीक्षा केन्द्र का कोड Exam Centre Code: F B 0 1

परीक्षा का प्रकार Type of Exam: संस्थागत Regular ● | भूतपूर्व परीक्षार्थी Ex. Student ○ | व्यक्तिगत Private ○ | बैक पेपर परीक्षा Back paper Exam ○

ANSWER BOOKLET NO.
11808865

A020908T
Paper Code

PART-IV

नामांकन संख्या Enrollment Number: C S J M A 2 1 0 0 1 4 4 4 8 2

परीक्षार्थी अनुक्रमांक संख्या Candidate's Roll Number: 2 4 0 4 0 0 0 0 0 0 8

पेपर कोड Paper Code: A 0 2 0 9 0 8 T

Shanya Agnihotri
Signature of Candidate

Signature of Invigilator

C S Facsimile

COE Facsimile

नोट : 1. परीक्षार्थी को निर्देशित किया जाता है कि आवरण पत्र के पृष्ठ भाग पर अंकित सभी निर्देशों को सावधानी पूर्वक पढ़ें। 2. बॉक्स में भरी जाने वाली प्रविष्टियाँ बायीं तरफ से शुरू की जायें। 3. गोलों को काले या नीले बॉलपेन से भरा जाये।

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-I

1. Read the instructions carefully given on the answer script and admit card.
2. Write Date of Exam, Shift, Paper Code & Name of Subject Correctly.
3. Write Name & Roll No. Correctly.
4. Write Semester & Branch Correctly.

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-III

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ Boxes.
2. Carefully study the example before you start marking.
3. As shown in the example below blacken the circles completely.

Correct method	Incorrect method
① ● ③ ④	✓ ✗ ◉ ❶

4. Make no Stray marks on this sheet.
5. **DO NOT WRITE OR MARK ON THE BAR CODE.**

IN ORDER TO AVOID UFM (UNFAIR MEANS) :

1. The Roll No. and Answer Book no. found elsewhere or any other symbol found in the answer book will be treated as unfair means.
2. Any tempering of Bar Code and Booklet no shall be treated as Unfair Means.
3. Do Not bring the materials like slip of paper/mobile/digital diaries/ study material/ revision notes in examination hall. Possession of the mobiles/ digital diaries/ electronic watch and any other electronic gadget except memory less scientific calculator shall be considered as UFM case.
4. Do not keep or paste currency note in answer script it shall be consider as UFM.

अनुचित साधन से बचने हेतु:

1. उत्तर पुस्तिका के निर्देशित स्थान को छोड़कर अनुक्रमांक एवं उत्तरपुस्तिका का क्रमांक कहीं और न लिखे तथा कोई भी चिन्ह न बनायें क्योंकि यह अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।
2. उत्तर पुस्तिका के बारकोड अथवा उत्तर पुस्तिका संख्या पर छेड़ करने पर अनुचित साधन प्रयोग माना जायेगा।
3. परीक्षा कक्ष में निम्न वस्तुएं साथ न लायें, जैसे लिखे हुए कागज के टुकड़े, मोबाईल, डिजिटल डायरी, कॉपी, पुस्तक यह सभी वस्तुएं जो अनुचित साधन के अन्तर्गत आती है। केवल संबंधित प्रश्नपत्र में ही मेमोरी लैस साइंटफिक कैल्कुलेटर ले जाने की अनुमन्यता होगी।
4. उत्तर पुस्तिकाओं में रूपये न रखें न ही उत्तर पुस्तिका में चिपकायें। ऐसा करना अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. प्रवेश पत्र एवं उत्तर पुस्तिका पर दिये गये निर्देशों को ध्यान से पढ़ें।
2. कवर पृष्ठ के दूसरी तरफ कुछ न लिखें।
3. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों पर दोनों तरफ लिखें।
4. प्रश्न पत्र पर अपने अनुक्रमांक के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
5. प्रश्न पत्र कोड एवं प्रश्न पत्र कोड सावधानी पूर्वक लिखें।
6. अपनी स्थिति स्पष्ट लिखें।
7. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों की संख्या देखें। अगर उत्तर पुस्तिका में पृष्ठ (1–24) से कम है या फटे हुए है, तो परीक्षा शुरू होने के पूर्व दूसरी उत्तर पुस्तिका ले लें।
8. प्रश्नपत्र को देख, यदि प्रश्नपत्र के विषय कोड, विषय का नाम तथा प्रश्न में कोई त्रुटि है तो उसके परीक्षा शुरू होने के 30 मिनट के अन्दर कक्ष निरीक्षक को तत्काल सूचित करें, उसके बाद विश्वविद्यालय द्वारा कोई कार्यवाही नहीं की जायेगी।
9. प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिये पैंसिल का प्रयोग न करें।
10. B कॉपी या अतिरिक्त ग्राफ नहीं दिया जायेगा।

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE

1. Read the instructions carefully given on the Question Paper Admit Card & Answer Script.
2. Do not write anything on back side of the cover page.
3. Write on both sides of pages of answer book.
4. Do not write anything on question paper except Roll Number.
5. Write Paper Code & Question Paper Id carefully.
6. CHECK the number of pages (1-32) or any other kind of damage in your answer script, if found than change the answer script immediately before the commencement of examination.
7. CHECK the Question Paper for any kind of discrepancy e.g Subject Code, Subject Name and Question of the Question Paper during first THIRTY MINUTES of the commencement of the exam, so that it can be corrected in TIME. After that no corrections shall be entertained by the university.
8. Do not use pencil for answering the question.
9. Write status correctly e.g. those appearing in carry over paper should fill in status as Carry Over. Those appearing as Ex Students should fill in status as ex.
10. No supplementary answer book & graph paper will be provided.

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-IV

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numberals in ☐ Boxes.
2. Use blue or black ball point pen for filling the circles.

	1	8	1	5	4	3	2	1	6	9

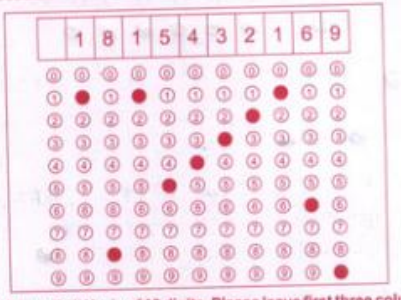

Note - If your Roll No. is of 10 digits. Please leave first three columns

A020908T 01

खण्ड - 'अ'

उत्तर-1 (a) 'मृच्छकटिकम्' संस्कृत नाट्य साहित्य में महाकवि शूद्रक के द्वारा प्रणीत एक नाट्यग्रन्थ है।

इस ~~नाटक~~ प्रकरण का नायक चारुदत्त है जोकि एक निर्धन ब्राह्मण है। उसकी नायिका बसन्तसेना है।

चारुदत्त की कतिपय चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं —

परिचय :-

चारुदत्त उज्जैन का एक निर्धन ब्राह्मण है जो कि निर्धन होते हुए भी अत्यन्त उदारमना है। वह उज्जयिनी की एक गणिका (वेश्या) बसन्तसेना से प्रेम करता है।

⟹ वह पहले निर्धन नहीं था किन्तु अपने अव्यय एवं सामाजिक स्थिति वश वह वर्तमान काल में निर्धनता को प्राप्त हुआ है।

उदारमना एवं दयालु हृदया :-

चारुदत्त अपने नाम को सार्थक करता हुआ अत्यन्त उदार एवं सुन्दर हृदय वाला व्यक्ति है।

वह निर्धन होते हुए भी सबकी ~~सहा~~ साथ सहायता करता है। किसी का भी दुख उससे देखा नहीं जाता है।

⟹ वह कर्णपूरक को उसकी वीरता के प्रदर्शन के रूप में अपनी बहुमूल्य दुशाला दे देता है।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code A 0 2 0 9 0 8 T

सच्चा प्रणयी :- वह वसन्तसेना से सच्चा प्रेम करता है। वह उसके रूप-सौन्दर्य पर अत्यन्त मुग्ध है।
उसका प्रेम भौतिक नहीं अपितु सच्चा, निष्ठायुक्त एवं असीम है।

धर्मनिष्ठ एवं सत्यवादी :- चारुदत्त अत्यन्त धर्मनिष्ठ (ईश्वर में विश्वास रखने वाला) है। वसन्तसेना की हत्या का आरोप उस पर आने पर वह झूठ नहीं बोलता बल्कि ईश्वर में विश्वास रखता हुआ सच का साथ देता है।

इस प्रकार, 'मृच्छकटिकम्' का नायक चारुदत्त एक महान व्यक्तित्व से युक्त निर्धन ब्राह्मण था।
महाकवि शूद्रक ने, चारुदत्त के माध्यम से यह बताया है कि —
"धन से अधिक, उत्तम चरित्र का महत्त्व होता है।"

उत्तर-1 (b) "दारिद्र्यमनन्तकं दुःखम्" यह कथन महाकवि शूद्रक ने अपने महान नाट्य ग्रन्थ (प्रकरण) "मृच्छकटिकम्" में चारुदत्त की निर्धनता के स्वरूप को प्रदर्शित करने में उद्धृत

A 0 2 0 9 0 8 T 03

की है —

महाकवि शूद्रक के ग्रन्थ में यह उक्ति चारुदत्त अपने मित्र विदूषक से कहता है —

"दारिद्र्यमनन्तकं दुःखम्"।

अर्थात्,

दरिद्रता अनन्त (अगाध) दुख का कारण है।

चारुदत्त अपने आरम्भिक काल में दरिद्र (निर्धन) नहीं था अपितु अपने अव्यय एवं सामाजिक कारण वश वह निर्धन हो गया है।

जब वह सम्पन्न था तब सभी उसके मित्र थे, सभी उसके बन्धु-बान्धव थे परन्तु निर्धन होने के बाद सब उससे दूर रहने लगे। उसकी मान-प्रतिष्ठा सब धूमिल हो गयी।

चारुदत्त विदूषक से कहता है कि —

"यदि मृत्यु और दरिद्रता में से किसी एक को चुनना है तो मैं मृत्यु का वरण करूंगा क्योंकि मृत्यु एक बार (थोड़ा ही) दुख देगी परन्तु दरिद्रता अनेक दुखों का कारण बनती है।"

अर्थात्, मृत्यु एक बार मारेगी परन्तु दरिद्रता रोज तिल-तिल करके मारेगी।

चारुदत्त कहता है कि,

जो व्यक्ति दरिद्र हो जाता है उससे उसके बन्धु-बान्धव, मित्रादि दूर हो जाते हैं जिससे वह अगाध दुःख को प्राप्त होता

Do Not Write anything in this Portion

है। अगाध दुख को पाकर व्यक्ति की बुद्धि का नाश हो जाता है और बुद्धि के नाश के बाद व्यक्ति का ही नाश हो जाता है।

इस प्रकार,
दरिद्रता अनेक दुःखों का कारण बनती है।

उत्तर- 1(c) 'मृच्छकटिकम्' महाकवि शूद्रक के द्वारा प्रणीत दस अंकों का एक लोक- जीवन पर आधारित प्रकरण है।

इसके तृतीय अंक का नाम "संधि-विच्छेद" है। तृतीय अंक का सारांश इस प्रकार है —

इस ~~अंक~~ अंक में ~~शर्विल~~ शर्विलक वसन्तसेना की दासी एवं अपनी प्रियतमा मदनिका को वसन्तसेना के गृह से मुक्त कराना चाहता है, परन्तु वसन्तसेना को दिए बिना कुछ यह कार्य सम्भव नहीं है।

अत: वह चारुदत्त के घर पर रखे हुए अलंकार, जोकि बसन्तसेना के ही हैं, उन्हें चुरा लेता है। जब यह बात चारुदत्त की पत्नी धूता को पता चलती है कि वे अलंकार चोरी हो गए हैं तो वह अपनी रत्नावली वसन्तसेना को देने के लिए विदूषक को दे देती है।

A 0 2 0 9 0 8 T 05

यहीं पर यह अंक समाप्त हो जाता है।

उत्तर 1(ख) "असत्पुरुष सेवेव दृष्टि विफलतां गता" यह श्लोकांश महाकवि विशाखदत्त के नाटक 'मुद्राराक्षस' से लिया गया है। मुद्राराक्षस एक राजनैतिक नाटक है।

इस पंक्ति का अर्थ है —

"असज्जन की सेवा करने से दृष्टि असफलता को ही प्राप्त होती है।"

अर्थात्,

असज्जन की सेवा करना उसके साथ शिष्टता का व्यवहार करना वैसे ही निरर्थक है जैसे दृष्टि (नेत्र) होते हुए भी सुन्दर वस्तु को न देखकर अवस्तु को देखते हुए अपने नेत्रों को विफल करना।

मुद्राराक्षस यह एक राजनैतिक परक नाटक है। इसमें कवि कहते हैं —

चाणक्य नन्द साम्राज्य का पतन करने के लिए कूटनीतिक युक्तियाँ बनाता है। यह उसकी एक राजनैतिक युक्ति ही है जिसमें वह राक्षस (प्रधान अमात्य) से कहता है कि — तुम तो असज्जन (धननंद) व्यक्ति की सेवा करके अपने नेत्रों को विफल कर रहे हो।

यह नाटक (मुद्राराक्षस) राजनीति एवं कूटनीति की रणनीति परक नाटक है

Paper Code A 0 2 0 9 0 8 T

उत्तर1-(ब) "मुद्राराक्षसम्" यह नाटक महाकवि विशाखदत्त द्वारा रचित एक राजनीतिक एवं इतिहास परक नाटक है।

इस नाटक में चाणक्य नन्द वंश का पतन एवं धनानन्द मौर्य वंश की स्थापना करना चाहता है —
यही इसकी मूल कहानी भी है।

धनानन्द का प्रधान अमात्य 'राक्षस' इस नाटक का प्रतिनायक है। वह चाणक्य की कुटनीति का विरोध करने के लिए अनेक चालें चलता है। परन्तु उनमें विफल होता है —

इस प्रकार राक्षस की कतिपय चारित्रिक विशिष्ताएँ इस प्रकार है —

<u>परिचय</u> :-
राक्षस नन्द वंश के सम्राट धनानन्द के दरबार का एक प्रधान एवं प्रभावशाली मंत्री है।
वह कुटनीति एव राजनीति में निपुण है।

<u>वफादार मंत्री</u> :-
वह अत्यंत वफादार है। वह राज्य के कार्यों में अपने कुटनीति परक व्यक्तित्व के कारण हिस्सा लेता है।

<u>अति - आत्मविश्वासी</u> :-
राक्षस अति आत्मविश्वासी

से भरा हुआ है। इसी कारण वह चाणक्य की योजनाओं के सामने विफल हो जाता है।

कूटनीति एवं राजनैतिक ज्ञान युक्त :-

राक्षस भी चाणक्य की भाँति कूटनीति एवं राजनीति जानता है परन्तु चाणक्य उससे एक कदम आगे ही है।

इस प्रकार,

राक्षस में अनेक गुण होते हुए भी वह मुद्राराक्षस का प्रतिनायक है, क्योंकि -

उसने अपने बल, बुद्धि, निपुणतादि का प्रयोग सही स्थान पर नहीं किया।

उसके इसी कार्य ने उसे एक प्रतिनायक के रूप में चित्रित किया।

नायक चाणक्य के विरोध में होने के कारण एवं उनके मार्ग में बाधा उत्पन्न करने के कारण भी वह एक प्रतिनायक है।

उत्तर -1(ग) 'मुद्राराक्षस' नाटक राजनीति पर आधारित एक अद्भुत नाटक है, जोकि महाकवि विशाखदत्त ने रचा है।

इस नाटक की विषय-वस्तु, इसमें छन्दों, अलंकारों एवं भाषा तथा भाव इसे एक उत्तम स्थान पर आधारित करते हैं। —

"मुद्राराक्षसम्" नाटक की विशेषताएँ :-

'मुद्राराक्षसम्' नाटक की कतिपय विशेषताएँ

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code A020908T

इस प्रकार है —

1- विषय वस्तु :-

• इस नाटक का मूल विषय — नन्द वंश का पतन एवं मौर्य वंश की स्थापना है।

• इस नाटक में चाणक्य के राजनीति एवं कूटनीतिक ज्ञान का दर्शन होता है।

• यह नाटक एक राजनीतिक काव्य है।

2- भाषा - शैली :-

• 'मुद्राराक्षसम्' में महाकवि ने संस्कृत का शुद्ध एवं योग्य अलंकारों (उपमा, रूपक, अनुप्रासादि) तथा वीरता सूचक शब्दों का प्रयोग किया है।

• अर्थ अत्यन्त गूढ है।

3- रस एवं काव्य-सौन्दर्य :-

• इसमें कवि ने प्रमुखतः से वीर रस का प्रयोग किया है।

• इतिहास परक एवं राजनीतिक कथावस्तु को लय-छन्दों एवं अलंकारों से अलंकरण कर एक काव्य के रूप में प्रस्तुत किया।

Paper Code: A020908T 09

५- राजनीतिक ज्ञान :-

• 'मुद्राराक्षसम्' नाटक राजनीति एवं कूटनीति तथा रणनीति पर आधारित नाटक है।

• इस नाटक में हमें राजनीति तथा अर्थशास्त्र से सम्बन्धित ज्ञान प्राप्त होता है।

निष्कर्ष :-

इस प्रकार, 'मुद्राराक्षसम्' नाटक राजनीति तथा अर्थशास्त्र ज्ञान प्रदान करता हुआ काव्यगत गुणों से युक्त है — जो कि इसकी विशेषता है।

उत्तर - 1(ग) "फलाविक शालिनोपि हि प्रविक्तिं भक्तिहीनात्फलम्"

सन्दर्भ :-

उपर्युक्त पंक्ति या श्लोकांश महाकवि भट्टनारायण प्रणीत 'वेणीसंहार' नाटक के प्रथम अंक से उद्धृत है।

प्रसंग :-

उपर्युक्त श्लोकांश में दुर्बुद्धि दुर्योधन द्वारा भगवान श्रीकृष्ण, जो कि दूत बनकर गए थे, को बन्दी बनाने के प्रयास को बताती हुयी उसके (दुर्योधन) का वर्णन करती हुयी कहती है —

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code A020908T

अर्थ :-

प्रज्ञा (बुद्धि), विक्रम (पराक्रम), शील से हीन ही व्यक्ति भक्तिहीनता का फल है।

व्याख्या :-

जब दुर्योधन श्रीकृष्ण को बन्दी बनाने की इच्छा करता है तब यह कृत्य उसके बुद्धिविनाश का ही कारण भूत है।

जो व्यक्ति भक्तिहीन है उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो चुकी है, उसका पराक्रम, शालीनता विहीन व्यक्तित्व है।

अर्थात्,

वह कुछ भी सोचने - विचारने के बिना ही कृत्य करता है।

उत्तर-1(h) वेणीसंहार :-

~~वेणीसंहार~~ 'वेणीसंहार' नाटक 'महाकवि भट्टनारायण' प्रणीतम छः अंकों में निबद्ध है। इसके प्रथम अंक का सारांश इस प्रकार है -

मंगलाचरण के पश्चात सूत्रधार एक श्लिष्ट पद्य के द्वारा इस बात की सूचना देता है कि महाराज युधिष्ठिर ने भगवान श्रीकृष्ण को दूत बनाकर दुर्योधन के समीप भेजा है। जिसे सुनकर भीमसेन का क्रोध भड़कने लगता है। वे कहते

है कि उन्हें अपने अपमान का बदला युद्ध से चाहिए न कि सन्धि से। वे रंगमंच पर ललकारते हुए कहते हैं —

"कुप्या संधिं भीमो विघटति युधं घटयत।"

भीमसेन सहदेव से कहते हैं कि वे इस सन्धि को नहीं मानेंगे। वे एक दिन के लिए अपने अग्रज की आज्ञा का उल्लंघन करने के लिए भी तैयार हैं।

"एकैकं दिवसं ममापि - - - - - ।"

भीमसेन शस्त्रागार की ओर जाते हुए पाञ्चाली की चतुःशाला में प्रवेश करते हैं। वे द्रौपदी को देखकर स्वयं को धिक्कारते हुए कहते हैं —

[illegible] पाँच पाण्डवों (अपार शौर्य युक्त) की [illegible] होते हुए भी पाञ्चाल राजतनया की यह दुर्दशा कैसे हुयी।

"जीवत्सु पाण्डुपुत्रेषु - - - - ।"

तभी द्रौपदी दुर्योधन पत्नी भानुमती के द्वारा जूड़ा बाँधने के लिए किए गए अपने अपमान को बताती है जिसे सुनकर भीमसेन का क्रोध भड़कने लगता है और वे दुर्योधन के ऊरुयुगल को चूर्ण करने वाली अपनी प्रतिज्ञा को सुनाता है।

तभी घबराया हुआ काञ्चुकी आकर बताता है कि दुर्योधन ने संधि-प्रस्ताव ठुकरा दी है। राजा युधिष्ठिर ने युद्ध की घोषणा कर दी है। तभी प्रसन्नचित्त भीम द्रौपदी से

Paper Code A 0 2 0 9 0 8 T

Do Not Write anything in this Portion

कहता है –

"चत्वारि वयम् ऋत्विजः
कर्मोपदेष्टा श्री हरिः।"

वह संदेश के साथ द्रौपदी से विदा लेता है और द्रौपदी उसके मंगल की कामना करती है।

उत्तर-1(I) 'वेणीसंहार' नाटक 'महाकवि भट्टनारायण' कृत है। जिसका मुख्य विषय – द्रौपदी के केशों का प्रतिशोध लेना है।

वेणीसंहार नाटक के अनुसार दुर्योधन की चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं –

अहंकारी एवं क्रूर।– दुर्योधन अत्यंत अहंकारी एवं क्रूर प्रवृत्ति का व्यक्ति है। उसने युधिष्ठिर द्वारा भेजे गए संधि-प्रस्ताव को भी ठुकरा दिया।

अन्यायी।– वह न्यायप्रिय नहीं है। उसके कुकर्म के कारण वश ही भीमसेन उसे मारने की प्रतिज्ञा करता है।

वीर।– दुर्योधन वीर एवं पराक्रमी है परन्तु वह एक अन्यायी, एवं दम्भ व्यक्ति है जिसका वध भीम द्वारा होता है

दुराचारी ।-

दुर्योधन अत्यंत दुराचारी है। वह भरी सभा में द्रौपदी के केश पकड़कर उसका अपमान करता है।

निष्कर्ष ।-

इस प्रकार, दुर्योधन, वीर, पराक्रमी एवं साहसी होते हुए भी दुराचरण से परिपूर्ण था। वह नाटक का प्रतिनायक है।

खण्ड - 'ब'

उत्तर- 2(क) अवन्तिपुर्या द्विज — — — — — वसन्तसेना ।।

सन्दर्भ ।-

प्रस्तुत श्लोक संस्कृत साहित्य के प्रसिद्ध नाटक 'मृच्छकटिकम्' के 'अलन्कार न्यास' नामक प्रथम अंक से उद्धृत है। जो कि 'महाकवि शूद्रक' द्वारा रचित है।

प्रसंग ।-

उपर्युक्त श्लोक में सूत्रधार चारुदत्त एवं वसन्तसेना का परिचय रंगमञ्च पर सभी श्रोतागणों एवं दर्शकगणों को देता है।

अर्थ -

अवन्ति पुरी (उज्जयिनी नगरी) में ब्राह्मण युवा निर्धन चारुदत्त रहता है तथा वसन्त ऋतु की शोभा के समान गुण से युक्त गणिका (वैश्या)

Do Not Write anything in this Portion

Do Not Write anything in this Portion

वसन्तसेना निवास करती है।

व्याख्या :-

सूत्रधार नाटक के प्रारम्भ में पात्रों का (नायक चारुदत्त एवं नायिका वसन्तसेना) परिचय देता हुआ उनका निवास एवं उनकी स्थिति विशेषता बताता है।

चारुदत्त ब्राह्मण है परन्तु निर्धन है तथा वसन्तसेना एक वैश्या है जो कि वसन्तऋतु के समान शोभायमान है।

अर्थात्

जिस प्रकार वसन्तऋतु में पुष्प खिलते हैं, चारों ओर हरियाली होती है तथा खुशहाली व्याप्त होती है। मानो वैसे ही वसन्तसेना का रूप-सौन्दर्य प्रकाशमान था।

उसका रूप-सौन्दर्य अलौकिक था। वह अत्यन्त आकर्षक, मन को हरनेवाली थी।

काव्य-सौन्दर्य :-

भाषा - शुद्ध संस्कृत, सरल।

अलंकार - उपमा, रूपक।

विशेष :-

~~...~~ के बीज के साथ नाट्य शु... को सूत्र कहते हैं तथा उसे धारण करने वाले तथा रंगमंच पर देवतादि की स्तुति करने वाले को 'सूत्रधार' कहते हैं।

Paper Code A 0 2 0 9 0 8 T

15

खण्ड - स

उत्तर-9

महाकवि भट्टनारायण :-

परिचय :-

भारतीय साहित्य एवं संस्कृत काव्य में महाकवि भट्टनारायण का नाम अत्यन्त सम्मानपूर्वक लिया जाता है। वे धर्म, नीति, आदर्श के क्षेत्र में अग्रणी हैं जोकि उनकी रचनाओं में स्पष्ट भी होता है।

जीवन काल :-

महाकवि के जीवन काल, स्थान एवं परिवार आदि की जानकारी उपलब्ध नहीं है।

- कुछ विद्वानों के अनुसार, वे कान्यकुब्ज के शाण्डिल्य गोत्र के सारस्वत ब्राह्मण थे।
- जो बंगाल के राजा आदिशूर के सादर आमन्त्रण पर [illegible] आए थे।

शिक्षा :-

- महाकवि ने संस्कृत का गहन अध्ययन प्राप्त किया था।
- वे वेद, शास्त्र आदि के ज्ञाता थे।
- उनकी रचनाओं में धर्म - दर्शन - नीति परिलक्षित होते हैं।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code A 0 2 0 9 0 8 T

16

कृतियाँ :- महाकवि की एकमात्र कृति 'वेणीसंहार' ही प्राप्त है -

• यह उनकी एक सुप्रसिद्ध नाट्य-ग्रन्थ है जो कि महाभारत पर आधारित है।

• यह छः अंको का नाटक है।

• इसका मुख्य विषय द्रौपदी के केशों का प्रतिशोध लेना एवं कौरवों का नाश करना है।

• यह नाटक वीर रस प्रधान है।

साहित्यिक योगदान :- महाकवि भट्ट नारायण का साहित्य [illegible] में अमूल्य योगदान रहा है।

• उन्होंने केवल मनोरंजन के आधार पर कृति की रचना नहीं की अपितु धर्म-नीति - आचार आदि की शिक्षा भी प्रदान की।

• उन्होंने वीर रस प्रधान नाटक लिखा तथा उसमें करुण, श्रृंगार, रौद्र आदि रस अंगभूत के रूप में है।

• उनके ग्रन्थ मात्र मनोरंजक परक ही नहीं बल्कि शिक्षाप्रद भी हैं।

निष्कर्ष :-

इस प्रकार, महाकवि ने भारतीय साहित्य एवं संस्कृत काव्य परम्परा को केवल मनोरंजक ग्रन्थ ही नहीं बल्कि शिक्षाप्रद, ज्ञानवर्धक ग्रन्थ दिया है।

उन्होंने जीवन [illegible] का ज्ञान बताया है।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code A 0 2 0 9 0 8 T

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

A 0 2 0 9 0 8 T

19

Do not write anything in this Portion

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

A	0	2	0	9	0	8	T

Do not write anything in this Portion

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion